>

Title: Need to re-align the National Highways in Uttarakhand.

श्री सतपाल महाराज (गढ़वाल): मैं पर्वतीय राज्यों के राजमार्गों की समस्याओं के बारे में बताना चाहता हूं। वर्तमान में इन राजमार्गों का पुनः एलाइंमेंट होना चाहिए। गलत एलाइंमेंट की वजह से समय व ईधन दोनों ही बर्बाद होते हैं। आज जब ईधन बचाने के मुहिम पूरे विश्व में चल रही है तो ऐसे में जरूरी है कि मार्गों का निर्माण इस प्रकार किया जाये कि ईधन की बचत हो। उत्तराखंड में ही यदि आप ऋषिकेश से ऊपर बद्रीनाथ की ओर चलते हैं तो व्यासी से सकानीधार तक काफी खड़ी चढ़ाई है, पहले नीचे से ऊपर जाओं फिर ऊपर से नीचे आओ, ऐसा नही होना चाहिए, एलाइंमेंट सीधा होना चाहिए, जिसमें ईधन और समय दोनों की बचत हो। यदि इसका सही एलाइंमेंट कर दिया जाये तो समय व ईधन दोनों बचेंगे। यहां यह कहना चाहता हूं कि मानकों के आधार पर सड़क नहीं बनती है। कालियासौड़-सेराबगड़ में सुंग का निर्माण् होना चाहिए, जिससे वह सुरक्षित आवागमन सुनिश्चित होगा। भूटान में दंतक द्वारा सड़क बनाई जाती है, वहां भी हमारे देश का बी.आर.ओ. सड़क बनाता है लेकिन वहां सड़के ए-क्न क्वालिटी की बनती हैं और हमारे यहां सड़कों की गुणवत्ता में कमी रहती है। विशेषकर पर्वतीय राज्यों में सड़कों का निर्माण ज्यादा मुश्किल है। पर्वतीय मार्गों को ज्यादा चौड़ा करने की आवश्यकता नहीं है परंतु ब्लाइंड मोड़ों को चौड़ा किया जा सकता है पुलियों की चौड़ाई बढ़ाइ जा सकती है। पानी की सड़कों से निकासी की उचित व्यवस्था की जानी चाहिए। नालियां न होने के कारण सड़कों पर पानी रूकता है और सड़कों को क्षतिग्रस्त करता है। मेरे संसदीय क्षेत्र में ही बद्रीनाथ एवं केदारनाथ मार्गों पर नालियां न होने के कारण पानी की निकासी नहीं होती है।

अतः मेरा केंद्र सरकार से अनुरोध है कि वह राष्ट्रीय राजमार्गों का रि- एलाईमेंट करें एवंवंवंवंवंवं नालियों की व्यवस्था करें, जिससे समय व ईधन दोनों की बचत हो सके।